संपादक के नोट

मैं, हमारे प्रभु और उद्धारकरता येशु मसीह के नाम से आप सबका अभिवादन करती हूँ। हम हमारे प्रभु को धन्यवाद करते हैं कि उसने हमें भरपूर वर्षा दी इस मौसम में वह भी हमारे दैनिक कार्यों में बिना किसी रूकावट के।

एक बार येशु के चेलें एक नाव में प्रवास कर रहे थे कि अचानक उनके विरूद्ध एक ज़बरदस्त तूफ़ान उठा जैसे दिया गया है **मत्ती १४:२४ में – परन्तु नाव किनारे से कुछ किलोमीटर दूर लहरों में डगमगा रही थी, क्योंकि हवा विपरीत थी।**

तूफ़ान का कारण क्या था? येशु नाव में नहीं था। मध्य–रात्री येशु समुद्र पर चलता हुआ आया। जब येशु नाव में चढ़ा, तूफ़ान रूक गया। **मत्ती १४:३२ – और जब वे नाव पर चढ़ गए तो हवा थम गई।**

एक और समय जब येशु के चेले नाव में प्रवास कर रहे थे एक ज़बरदस्त तूफ़ान उठा। किस कारण उठा? उन्होंने येशु को सोने दिया क्योंके उन में से कोई भी उस से बात नहीं कर रहा था। वह नाव के निचले हिस्से में जाकर सो गया।

आज भी हम में से बहुत–से लोग येशु के साथ अच्छा संबंध नहीं रखते, जिसके कारण उनके जीवनों में तूफ़ान हैं।

पूराने नियम में हम देखते हैं, नबी योना ने परमेश्वर के आज्ञा को न माना और जिस दिशा में उसे जाने को कहा गया था, उसके उल्टे दिशा में वह भागा। इस लिए जिस नाव में वह प्रवास कर रहा था, उसे एक भयंकर तूफ़ान का सामना करना पड़ा।

योना के सारे स:प्रवासी तूफान से भयभीत थे। नबी योना समझ गएं की समुद्र क्यों परेशान था। उसने उन्हें उसे समुद्र में फैंकने के लिए कहा ताकि समुद्र शांत हो जाए।

कई लोग जिन्होंने योना के समान आज्ञा न माना हैं, अगर वें पानी में बप्तीस्मा लेंगे तो उनके जीवनों के तूफ़ान रूक जाएंगे। सोचो कि तुम तुम्हारे परिवार के योना हो। तुम पर तूफ़ान आने से पहले पश्चाताप करलो। **यहेजकेल ३७:९-१० – तब उसने मुझ से कहा, "हे मनुष्य के सन्तान, श्वास से नबुवत कर, हां, नबुवत करके श्वास से कह, प्रभु यहोवा यों कहता है: हे श्वास, चारों दिशाओं से आकर इन घात किए हुओं में श्वास फूंको कि वे**

जीवित हो जाएं।" अतः उसकी इस आज्ञा के अनुसार मैंने नबूवत की और उनमें श्वास आ गया और वे जीवित होकर अपने पैरों पर खड़े हो गए, और एक अत्यन्त विशाल सेना बन गई।

एक दिन परमेश्वर का हाथ नबी यहेजकेल पर आया। परमेश्वर की आत्मा उसे एक हड्डियों से भरे जगह में ले गया। केवल ढ़ेर सारी हड्डियाँ ही नहीं लेकिन सूखी हड्डियाँ। परमेश्वर ने नबी यहेजकेल से पूछा की क्या सूखी हड्डियाँ जी सकतीं हैं। **यहेजकेल ३७:३ – और उसने मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान, क्या ये हड्डियाँ जीवित हो सकती हैं?" तब मैंने उत्तर दिया, हे प्रभु यहोवा, तू ही जानता है।"**

आज बहुत सी हड्डियाँ सूखी दिखती हैं, क्या उन्हे जीवन मिलेगा? क्योंकि सूखी हड्डियों में जीवन आने के लिए उन्हें स्वर्गीय हवा प्राप्त करना होगा। केवल तब सूखी हड्डियाँ जीवन प्राप्त करेंगी और वें प्रभु की आवाज़ को सुनेंगी। **इफिसियों २रू१ कहता है, तुम तो उन अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे।**

पवित्र आत्मा सारे मानव–जाति को कहीं भी नया जीवन देने के लिए सामर्थी है। जहाँ भी तुम देखो, वहाँ बहुत–से हैं जो पाप के गड्ढ़ो में गिरे हैं। **यहेजकेल १८रू४ – देखो, सब प्राण मेरे हैं, जैसे पिता का प्राण वैसे ही पुत्र का प्राण दोनों मेरे हैं, जो कोई पाप करेगा वही मरेगा।** जब स्वर्गीय हवा आता है, सारी आत्माएँ जो पापों में मरे हैं वें जीवन पाएंगे। **यहेजकेल ३७रू९ कहता है, तब उसने मुझ से कहा, "हे मनुष्य के सन्तान, श्वास से नबुवत कर, हां, नबुवत करके श्वास से कह, प्रभु यहोवा यों कहता हैः हे श्वास, चारों दिशाओं से आकर इन घात किए हुओं में श्वास फूंको कि वे जीवित हो जाएं।"**

नबी यहेजकेल ने चारों दिशाओं की हवाओं को नबुवत की। यह समय है स्वर्गीय हवा पाने का, **प्रेरितों के काम १रू८ – परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे, और यरूशलेम, सारे यहूदिया और सामरिया में, यहां तक कि पृथ्वी के छोर तक तुम मेरे साक्षी होगे।"**

यह हवा पवित्र आत्मा का है, इसलिए यह तुम में परिवर्तन लाए। प्रार्थना करें प्रभु से कि परमेश्वर की महिमा तुम में भरें।

मैं प्रार्थना करती हूँ की तुम्हारे जीवन का हर तूफ़ान थम जाए, और परमेश्वर का प्यार, आनंद और शांति तुम्हें भर दें और तुम्हारे परिवारों को भी।

परमेश्वर तुम सब को आशिषित करें।

पास्टर सरोजा म.

येशु – विजयी

पवित्र शास्त्र **यूहन्ना १६रू३३** में कहता है **– ये बातें मैंने तुमसे कही हैं, कि तुम मुझमें शांति पाओ। संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु साहस रखो – मैंने संसार को जीत लिया है।"** हर घर पर एक दरवाज़ा होना ज़रूरी है, ताकि एक उसमें प्रवेश कर सकें, अंदर–बाहर जा सके। इसी प्रकार विश्वासियों के जीवन में और प्रभु के चुने लोगों के जीवन में मुसीबतें तो होंगी, लेकिन प्रभु स्वयं उनके साथ इन सारी मुसीबतों में होगा। जिसने संसार पर जय पाया वह हमारे साथ रहेगा। वही है जो पूरे संसार को बचाता है और उसने संसार पर जय पाया है। शद्रक, मेशक, अबेदनगो के जीवन में धधकती भट्ठी का आग सात गुना बढ़ाया गया, लेकिन आज, हमारे जीवन में अगर मुसीबतें सत्तर गुना भी बढ़े तो प्रभु हमे याद दिलाता है कि उसने संसार पर जय पाया है जैसे दिया गया है यूहन्ना १६रू३३ में। चाहे वह दुख या मसीबतें हो वह विजय देता है विश्वासियों के जीवन में। हम पढ़ते हैं **भजन संहिता २३रू५ – तू मेरे शत्रुओं के सामने मेरे लिए मेज़ लगाता है, तुने मेरे सिर पर तेल उण्डेला है, मेरा प्याला उमड़ रहा है।** प्रभु ने हमारे लिए हमारे शत्रुओं के बीच मेज़ बिछाया है। जैसे कि वचन कहता है कि दुख और मुसीबत इस संसार में रहेंगे लेकिन हमे विश्वास करना है कि प्रभु ने इस संसार पर जय पाया है। प्रभु की सेवा के समय फरीसियों और सदूकियों और याजकों ने प्रभु को सताया। उन्होने कभी न कहा कि वह इस संसार में लोगों के पापों को क्षमा करने और उन्हे आशीष देने आया लेकिन उन्होने प्रभु को सताया। प्रभु ने उसका अपना जीवन दिया और संसार पर जय पाया। आज वें देख पाते हैं कि क्या प्यारा परमेश्वर वह था। दुख और संकट तो हमेशा रहेंगे, लेकिन हमे विश्वास करना है कि जिस प्रभु ने संसार को जीत लिया, वह हमारे साथ है। जब हम विश्वास करते हैं इस प्रकार से तब जो भी हमारा पाप, हमारा दुख, हमारे बोझ हैं, प्रभु इनसे हमे स्वतंत्र करेगा और हमे विजय देगा। हम देखते हैं यूहन्ना के ८वे अध्याय में उस स्त्री के बारे में जो व्यभिचार में पकड़ी गई । एक तरफ़ उन्होने उसे प्रभु की परीक्षा करने के विचार से लाया और दूसरी तरफ़ वें उसपर पथराव करके उसे मार ड़ालना चाहते थे। लेकिन संसार का तारणहार वहाँ पर था, एक जो सारे संसार का पाप ले सकता था, वहाँ पर था और उस स्त्री को अच्छा न्याय मिला। हम पढ़ते हैं **यूहन्ना ८:१-१० – परन्तु येशु जैतून पर्वत पर गया। भोर को वह फिर मंदिर में आया। सब लोग उसके पास आने लगे, और वह बैठकर उन्हें उपदेश देने लगा। तब फरीसी और शास्त्री एक स्त्री को लाए जो व्यभिचार में पकड़ी गई थी और उसे बीच में खड़ा किया। उन्होने उस से कहा, "गुरू, यह स्त्री व्यभिचार करते हुए पकड़ी गई है। व्यवस्था में तो मूसा ने हमें ऐसी स्त्री को पथराव करने की आज्ञा दी है। तू इस विषय में क्या कहता है?" वे उसे परखने के लिए ऐसा कह रहे थे, जिस से कि उस पर दोष लगाने के लिए कोई आधार मिले। परन्तु येशु झुक कर अपनी उंगली से भूमि पर लिखने लगा। परन्तु जब वे बार बार उस से पूछते रहे, तो उसने सीधे खड़े होकर उनसे कहा, "तुम में जो निष्पाप हो, वही सब से पहिले उसे पत्थर मारे।" वह फिर झुक कर उंगली से भूमि पर लिखने लगा। जब उन्होंने यह सुना, तो पहिले वृद्ध तब एक एक करके सब जाने लगे, और वह अकेला रह गया,**

और स्त्री वहीं बीच में खड़ी रह गई। तब येशु ने सीधे खड़े होकर उस से कहा, "हे स्त्री, वे कहां गए? क्या किसी ने तुझे दण्ड की आज्ञा नहीं दी?

येशु – वह जो हमारे विचारों को जानता हैं

क्या हि प्यारा परमेश्वर है वह! यह सारी बातें इस संसार में होती हैं। लेकिन संसार को ऐसे पाप से बचाने वाला परमेश्वर आज भी हमरे साथ है। मूसा के कानून के अनुसार उस स्त्री पर पथराव करके उसे मार ड़ालना था। मूसा को स्वर्गीय पिता ने यह कानून दिया। पिता ने कानून देने के बाद उसके पुत्र को भी भेजा इस संसार को बचाने के लिए। लोग नहीं जानते थे कि प्रभु येशु उसका जीवन उनके लिए देने आया था और यह कि वह अनन्तकालिक पिता है। उन्होने उसे नबी समझा जो सुसमाचार देता है और अच्छे कार्यों को करता है। वें नहीं जानते थे कि वह संसार का उद्धारकर्ता है। यही कारण है कि पाँचवे वचन में उन्होंने प्रभु से पूछां कि वह क्या कहता है। प्रभु जानता था कि अगर वह अपने आप को प्रकट करता और उसके अधिकार को, तो यह लोग उसके कार्यों में रूकावट लाएंगे जो प्रभु को इस संसार में अब भी करना था। प्रभु, जिसने इस संसार में विजय पाया, उनके विचारों को जानता था और फरीसियों और सदूकियों की अभिलाषा को समझता था। प्रभु ने फिर हर एक के पापों को ज़मीन पर लिखना शरु किया और यह कि वह उन्हें बचाने आया है, उनके लिए खून बहाने आया है और उनके दुखों को अपने–आप पर लेने आया है। जैसे ही हर एक ने यह देखा वे एक–एक करके वहाँ से निकल गए। इन लोगों के किए हुए हर पाप के सामने इस स्त्री का पाप छोटा निकला।

येशु जो हमारे पापों को क्षमा करता है

हम पढ़ते हैं **यूहन्ना ८:१० – तब येशु ने सीधे खड़े होकर उस से कहा, हे स्त्री, वे कहां गए? क्या किसी ने तुझे दण्ड की आज्ञा नहीं दी?" वह बोली, किसी ने भी नहीं, प्रभु।" तब येशु ने कहा, "मैं भी तुझे दण्ड की आज्ञा नहीं देता। जा, अब से फिर पाप न करना।** जैसे पिता ने उसे बताया प्रभु ने उन प्रगटिकरण को ज़मीन पर लिखने में व्यस्थ था जो हर एक के बारे में था जो उस स्त्री पर पथराव करना चाहते थे। अंत में जब प्रभु ने उसकी आँखों को उठाकर देखा तो केवल वह स्त्री वहाँ अकेली थी। फिर प्रभु ने उस स्त्री से पूछा कि तुम पर आरोप लगाने वाले कहाँ हैं और उन्होने उसे दण्ड़ नहीं दिया? उस स्त्री के पाप के माध्यम से प्रभु सारे संसार के पाप को लेने आया और यही कारण है कि उसने लोगों को उसके पापों का जवाब दिया। इन लोगों ने प्रभु के विरूद्ध बहुत बात की। जब प्रभु ने महान कार्य किए तब लोगों ने कहा कि वह दुष्ट आत्मा के द्वारा कार्य करता था और वें बहुत–से झूठ और दुष्ट बातें प्रभु के विरूद्ध बोलने लगे। प्रभु इस संसार में एक मनुष्य के रूप में आया और इन सारी मुसीबतों को झेले। प्रभु जानता था कि कैसे कुछ लोग उससे स्वार्थी मकसद के कारण प्यार करते थे, कैसे कुछ लोग परमेश्वर की सेवा करने की आशा करते थे और वह सबके हृदय की अभिलाषा को जानता था। एक मनुष्य के जैसे हमारी जो भी दुख हैं वह समझ सकता है। जब एक मनुष्य उसके प्रभु में जो जीवन है उसमें तकलीफ़ का सामना करता है, प्रभु उसके दुख को समझ सकता है और यही जानने के लिए प्रभु इस संसार में मनुष्य के रूप में आया। हम पढ़ते हैं **इब्रानियों २:१८ – जबकि उसने स्वयं परिक्षा की दशा में दुख उठाया, तो वह उनकी भी सहायता कर सकता है जिनकी परिक्षा होती है।** इस संसार के विषयों में प्रभु ने बहुत कुछ झेला होगा। लोगों ने, प्रभु येशु के विरूद्ध जो मनुष्य के रूप में आया, बहुत झूठ बोले। अगर लोग येशु के विरूद्ध झूठ बोल सकते थे तो फिर यह स्त्री उनके सामने क्या थी। प्रभु लोगों के बारे में सब कुछ समझ सकता

है। प्रभु स्वयं इन मुसीबतों से गुज़र चुका है और आज भी जो इसी प्रकार के समस्याओं में दबे हैं, प्रभु मदद करने के लिए तैयार है जैसे लिखा गया है यूहन्ना १६रू३३ में। जब हम निंदा का सामना करते हैं दुख और तकलीफों में हैं, हमे जानना हैं कि प्रभु ने इस संसार पर विजय पाया है। अगर हम उसपर हमारी सारी समस्याओं के लिए विश्वास करते हैं तो वह एक परमेश्वर है जो हमे हर परिस्थिति में विजयी बनाएगा। हमे एक चीज़ याद रखना हैं, हमे सच्चाई में रहना है। जो भी अन्य लोग कहे, हमे सच्चाई में रहना हैं। जब वह स्त्री प्रभु के पास लाई गई, उसके मन में जो भी विचार थे प्रभु उसे जानता होगा। जब वह स्त्री प्रभु के सामने थी, उसने उस से क्या, कैसे और क्यों यह स्थिति उसके जीवन में आई, नहीं पूछा। वह एक ऐसा परमेश्वर है जो सारे लोगों के हृदयों को जानता था। अंत में प्रभु ने उस से कहा कि वह और पाप न करे और उसे भेज दिया, क्योंकि प्रभु सारे संसार के पापों को उसी के ऊपर लेने भेजा गया था। इसके पश्चात उस स्त्री ने अवर्णनीय आनंद पाया होगा और प्रभु से बहुत प्यार किया होगा। उसने अपने मन में सोचा होगा अगर प्रभु वहाँ न होता तो यह दुष्ट लोग मेरे साथ क्या करते। हमारे जीवनों में जब हम ऐसे दुख से गुज़रते है, क्या हमे संसार आज़ादी में छोड़ेगा। वें एक मौके का इंतज़ार करेंगे उस व्यक्ति को नीचे गिराने के लिए और बड़ी इच्छा से इंतज़ार करेंगे उसके गिरने में। लेकिन हमारा परमेश्वर हमारा बाहरी दुख या हम जो शब्द बोलते हैं नहीं देखता है, वह हमारे हृदय को देखता है। अगर हम इस प्रभु येशु पर विश्वास करते हैं तो जैसे उसने संसार पर विजय पाया है उसी प्रकार हमे भी संसार पर विजय प्राप्त होगा।

येशु – जीवन दाता

जैसे दिया गया है लूका ७ में, प्रभु का सामना एक मैय्यत से हुई एक ऐसे स्थान पर जहाँ दो रास्तें एक ही जगह पर मिलते हैं। वहाँ प्रभु ने एक माँ के हृदय को देखा। प्रभु के इस पृथ्वी पर सेवा करने के समय बहुत से मरे होंगे लेकिन इस विशेष स्थिति में इस माँ को उस मरे बेटे के अलावा और कोई सहारा नहीं था। माँ के हृदय को देखने के बाद प्रभु ने उस मरे मनुष्य के शरीर को छूआ और वह मरा मनुष्य उठकर बात करने लगा। लाज़र मरकर जा चुका था और चार दिन तक कब्र में गढ़ा हुआ था, लेकिन परमेश्वर जो संसार पर विजय देता है वहाँ आया और परिवार ने विजय पाया। इसलिए उस विजय के लिए जो प्रभु हमे देता है, हमे प्रभु कि स्तुति करना है। हमे हर स्थिति में उसकी स्तुति करना है, उस पर विश्वास करना है और उसके वचन पर स्थिर रहना है, फिर वह प्रभु जिसने संसार पर जय पाया है निश्चित रूप से तुम्हारे परिवार में, तुम्हारे जीवन में और जिन कार्यो को तुम करते हो, उन में विजय देगा। लेकिन जब हम प्रभु को भूल जाते हैं जो इस संसार में विजय हुआ है और हमारे खुद के रीति से सोचने लगते हैं तो हम असफ़ल होते हैं उन सब कार्यो में जिन्हें हम करते हैं। लेकिन जब हम विश्वास करते हैं उस पर तब वह हमारे कार्य को आशिषित करेगा। लाज़र मर चुका था और गाड़ा गया था और उसकी बहन ने कहा कि अब मृत शरीर से दुर्गंध आती होगी। लेकिन विजयी परमेश्वर आया और उस परिवार में विजय दिलाया। हम पढ़ते है **लूका ७:११-१५** में – **इसके तुरन्त पश्चात वह नाइन नामक एक नगर में गया। उसके चेले भी उसके साथ चल रहे थे, और उनके साथ एक बड़ी भीड़ भी चली आ रही थी। जब वह नगर के फाटक पर पहुंचा तो देखा, लोग एक मुर्दे को जो अपनी मां का एकलौता पुत्र था बाहर लिए जा रहे थे। और वह विधवा थी और नगर के बहुत–से लोग उसके साथ थे। विधवा को देख कर प्रभु को उस पर बड़ा तरस आया और उसने कहा, "मत रो। फिर उसने पास आकर अर्थी को छुआ और कन्धा देने वाले रूक**

गए। तब उसने कहा, हे जवान, मैं तुझ से कहता हूं, उठ!" मुर्दा उठ बैठा और बोलने लगा। येशु ने उसे उसकी मां को सौंप दिया। वह स्त्री प्रभु के पास नहीं गई और उसके चरणों में गिरकर उसके बेटे के प्राण के लिए नहीं रोई। प्रभु ने देखा कि उसकी माँ विधवा थी और इस दुनिया में अकेली थी। इस संसार में ऐसे अनेक लोग हैं जिनके लिए कोई भी नहीं है सहारे के लिए, और ऐसी कई विधवाएँ भी हैं। प्रभु येशु इस संसार में ऐसे लोगों को सहारा देने आया। यह स्त्री विधवा थी और बहुत से लोग उसके साथ थे। यह सारे लोग उसके बेटे को जीवन नहीं दे पाएँ। यह परमेश्वर था जिसने उसे फिर जीवन दिया। यह स्त्री उसके बेटे को खो चुकी थी। लोग दुख का सामना अलग–अलग तरीकों में करेंगे और प्रभु के वचनानुसार दुख और संकट तो इस संसार में रहेंगे। लेकिन हमारा प्रभु ही एक है जो हमे संसार पर जय देता है।

येशु दयालु परमेश्वर

जैसे वचन कहता है, प्रभु ने उस स्त्री को देखा और उसपर दया किया क्योंकि प्रभु ने उसका हृदय देखा। वह रोते हुए आई होगी शव के साथ उसकी दुखों का वर्णन करते हुए। लेकिन प्रभु ने उसे न रोने के लिए कहा। वहाँ पर काफ़ी लोग थे मैय्यत का पीछा करते हुए आ रहे थे लेकिन उसके बाद कौन उसके साथ रहेगा, वह जानती थी और प्रभु जानता था। प्रभु शव के पास आया और उसे छूआ और जवान मनुष्य को उठने की आज्ञा दी। यहाँ पर हम प्रभु के अधिकार को देखते हैं। प्रभु को इस संसार पर विजय मिला है और उसपर अधिकार भी है। मृतक भी जानता होगा की जीवन–दाता आया है और मृतक भी बैठ गया और बोलने लगा। जब वह फिर जीवित हुआ उसने क्या कहा होगा? उसने अपने माता को बुलाया होगा क्योंकि वें एक दूसरे से बहुत प्यार करते थे। वे प्रभु को शायद नहीं जानते थे। लेकिन प्रभु ने उनके हृदयों को देखा। बहुत–से बार जब लो अपने मृत्यु के करीब होते हैं तो बहुत कुछ कहना चाहते हैं लेकिन अपने हृदय के विचारों को बोल नहीं पाते। वें अपनी आँखों से इशारा करते हैं हाथों से भी और गुज़र जाते हैं। प्रभु उस जवान मनुष्य के विचारों को जानता होगा जब वह मरा, और वह जवान मनुष्य मृतकों में से उठा और बात करने लगा। हमारा परमेश्वर एक महान परमेश्वर है और वह आज हमसे कहता है "धाड़स बाँधो, मैं इस संसार को जीत चुका हूँ।"

येशु – हर परिस्थिति में विजय देने वाला

हमे परमेश्वर पर विश्वास करना हैं जिसने संसार पर विजय पाया है। तुम्हारे जीवन में चाहे किसी भी प्रकार की समस्या का तुम सामना करते हो, प्रभु कहता है "धाड़स बाँधो, मैंने संसार को जीत लिया है।" प्रभु ने इस संसार को जीत लिया है ताकि हम उसके नाम से विजय प्राप्त करे। जब हम परमेश्वर के बच्चें बनते हैं हम दुष्ट के दुषमन बनते हैं। जैसे कि जब दो दल होते हैं और जब हम एक दल में जुड़ जाते हैं तो दूसरे दल के लोग हमे उनके दुष्मनों के जैसे देखते हैं। इस लिए जब हम परमेश्वर पर विश्वास करते हैं और उसकी ओर बढ़ते हैं तब हम दुष्ट के दुष्मन बन जाते हैं। हम पढ़ते हैं **इफिसियों ६:१० – अतः प्रभु और उसके सामर्थ की शक्ति में बलवान बनो।** हम कोशिश करेंगे सब कुछ हमारी मर्ज़ी से करने के लिए लेकिन अंत में हमे उसके नाम पर खड़ा होना हैं। हमारे जीवनों में विजय प्राप्त करने के लिए और हमारे जीवनों में सफ़ल होने के लिए, अंत में हमे प्रभु पर विश्वास करना हैं। हम जो भी अपनी बुद्धि और ज्ञान से करते हैं, अंत में हमे सब कुछ छोड़कर प्रभु पर विश्वास करना हैं। हमे उसके सामर्थ और ताकत पर विश्वास करना हैं। हमारे प्रयत्न जो भी हो अंत में सारी चीज़ों के लिए हमे अपने तरफ़ प्रभु कि ज़रूरत हैं। अगर प्रभु हमारे साथ नहीं तो कोई काम नहीं होगा।

येशु – परमेश्वर जो हमारी प्रार्थनाओं को सुनता हैं

हम पढ़ते हैं **भजन सहिता २०:१-२ – संकट के दिन यहोवा तेरी सुन ले! याकूब के परमेश्वर का नाम तुझे ऊंचे स्थान पर सुरक्षित रखे। पवित्र स्थान से वह तेरी सहायता करे, और सिय्योन से तुझे सहारा दे!** हमारा परमेश्वर हमारी प्रार्थना दुख और तकलीफ़ के समय सुनेगा। हमारे मित्र, हमारे नज़दीकी लोग और संसार के लोग हमारे साथ अच्छे से रहेंगे हमारे अच्छे समयों में। वें हमारे उपस्थिति में मन–भावक बातें करेंगे, लेकिन हमारी पीठ–पीछे वें अपनी ज़बानों को अपने विरूद्ध चलाएंगे। लेकिन जब हम उसको हमारे संकट के समय पुकारेंगे, तब वह ज़रूर हमारी प्रार्थना को सुनेगा जैसे ही हम प्रभु पर विश्वास करते हैं। वह हमारी सुनेगा, जैसे वचन भजन संहिता २०:२ में दिया गया है। यह सहाय संसार से नहीं, लेकिन प्रभु के घर की ओर से है, सिय्योन से, परमेश्वर का दूत आएगा और हमारी मदद करेगा। हम **भजन संहिता २०:७-८ –** में पढते हैं **कि मनुष्य पर विश्वास करने वाले लोगों का क्या होता है – किसी को रथों पर तो किसी को घोड़ों पर गर्व है, परन्तु हम तो अपने यहोवा परमेश्वर के नाम पर ही गर्व करेंगे। वे तो झुके और गिर पड़े, परन्तु हम उठे और सीधे खड़े हो गए।** जब हम हमारी बुद्धि, हमारा धन, पद, हमारी चतुरता और हमारे तीव्रता पर भरोसा करते हैं तब हम ज़मीन पर गिरते हैं और दो भाग होते हैं। लेकिन जब हम प्रभु पर विश्वास करते हैं जिसने हमे इस संसार पर विजय दिया है, तब हम उठेंगे और स्थिर रहेंगे आनंद में। हमे यह आशीष हमारे जीवनों में और हमारे परिवारों में पाना है। यह काफ़ी नहीं कि हम विश्वासी हैं और प्रार्थना कर रहे हैं यह भी ज़रूरी हैं कि हम प्रभु पर विश्वास करें जिसने इस संसार पर विजय पाया है। अगर हम सोचते हैं कि हम अपनी बुद्धि से हम अपने समस्याओं से बाहर आ सकते हैं तो हमे कभी जय नहीं मिलेगा। पाप तो पाप है, अगर हमने गलती की है तो मनुष्य हमे माफ़ नहीं कर सकता है। लेकिन यह प्रभु है जो हर व्यक्ति के पाप को देखता है। कौनसे पाप दुख भरा है और कौनसे नहीं, यह प्रभु जानता है। एक व्यक्ति ने सुई चुराई होगी, और एक ने बकरी। लेकिन चोरी तो चोरी है प्रभु के सामने, और न्याय प्रभु के सामने एक समान रहेगा। इस लिए हर समय हमे प्रभु की ओर जाना है। हमारी समस्याएं चाहे जो भी हो, पाप या दुख, हमे प्रभु के पास जाना चाहिए। प्रभु को इस संसार पर विजय मिला है। वह प्रभु है जो हर समस्या पर हमे विजय देता है, परिस्थिति या दुख जो इस संसार में है। यह वह सामर्थी परमेश्वर जो हमारे साथ है।

येशु – परमेश्वर जो घायल करता है और मरहम भी लगाता है।

हम पढ़ते हैं **भजन संहिता ११९:७१ – मुझ पर जो क्लेश आया वह मेरे लिए भला ही हुआ कि मैं तेरी विधियों को सीख सकूं।** जब ऐसी स्थितियाँ हमारे जीवन में आती हैं, यह हमारे लिए अच्छा है। व्यभिचार में पकड़ी गई स्त्री प्रभु से प्रभु के न्याय के बाद बहुत प्यार करती होगी। उसने कहा होगा "कितना अद्‌भुत परमेश्वर है वह, उसने मुझे शुद्ध किया और मेरे पापों को क्षमा किया। उसने मुझे जाने के लिए कहा और मेरी निंदा नहीं की। अब वह प्रभु को जान गई होगी। अगर लोगों ने उसे प्रभु के पास उसके लिए दण्ड़ पाने के लिए नहीं ले गए होते तो उसे प्रभु को जानने का मौका नहीं मिलता। वह अपने पापों में मर जाती। लेकिन प्रभु की ओर लाए जाने पर वह प्रभु को जान पाई। इसलिए जब ऐसी मुश्किल स्थितियाँ और दुख हमारे जीवन में आता है तब प्रभु हमारी ओर एक कदम बढ़ाता है उसका प्यार हमे और हमारे परिवार को बताने के लिए। जब वह माफ़ करता है तब वह हमे उसकी सेवा करने के लिए स्थिर करेगा। यह वह समय है जब हम प्रभु को रूके बगैर धन्यवाद

करेंगे और उसे पहले से अधिक जानेंगे। हम कह सकते हैं "हो, कितना सामर्थी परमेश्वर! तू मुझसे कितना प्यार करता है!" हम पढ़ते हैं **भजन संहिता ११९:६७ – पीड़ित होने से पहले मैं भटक गया था, परन्तु अब मैं तेरे वचन को मानता हूं।** जैसे कि भजन संहिता रचईकार लिखता है, उसके जीवन में इस समस्या का सामना करने से पहले वह पाप में जी रहा था लेकिन अब उसने प्रभु का वचन माना है। फिर एक बार वह प्रभु को दुख नहीं देना चाहता है और इस कारण वह परमेश्वर के वचन के अनुसार चलता है। जब भी कोई ताड़ना आता है उस में से हम हमारे जीवनों में बहुत कुछ सीख सकते हैं। आज, जब हम प्रभु पर भरोसा करते हैं, मुसीबतें और शरम का सामना सच्चाई के कारण करते हैं तब हम से बढ़कर आशिषित और कोई नहीं। हम राजा दाऊद के जीवन में देखते हैं कि एक समय वह युद्ध के लिए नहीं जाता है लेकिन वह उसके घर के छत पर था। यह उसके ठोकर का कारण बना, वह पाप में गिरा और इस कारण उसके जीवन में अधीक मुश्किले आईं। हम पढ़ते हैं **अय्यूब ५:१८ – क्योंकि वही घायल करता है और वही पट्टी भी बान्धता है, वही मारता, और वही अपने हाथों से चंगा भी करता है।** जब प्रभु हमसे प्यार करता है, हमारे अच्छे के लिए वह हमे बहुत मारता है। वह हमे ऐसा मारता है कि चमड़ी निकल आए और इसके बाद वही मरम पट्टी भी करता है। अगर तुम नहीं चल पाते हो तो वह तुम्हारे हाथों को पकड़ता है और तुम्हे चलने के लिए मदद करता है। प्रभु हमे एक–दो चाँटा मारकर नहीं छोड़ देता है, जैसे हमारे माता–पिता करते हैं। वह हमारा चर्म निकलने तक मारता है और फिर वह मरहम लगाता है। अगर तुम चल नहीं पाते हो तो वह तुम्हे चलाएगा और तुम्हे पार ले जाएगा। यह हमारा सामर्थी परमेश्वर है। परमेश्वर तुम्हे इतना क्यों मारता है? यह तुम्हे बदलने के लिए, तुम्हे आशीष देने के लिए। वह इस संसार में हमे जीवन देने आया। हम पढ़ते हैं **होशे ६:१ – "आओ, हम यहोवा के पास लौट चलें क्योंकि उसने फाड़ा तो है, पर वही हमें चंगा भी करेगा; उसने हमें घायल तो किया, पर वही पट्टी भी बान्धेगा।** प्रभु हमे मारता है और चंगा भी करता है और जैसे कि वचन कहता है कि हमे मुड़कर प्रभु की ओर वापस आना है। प्रभु हमे हमारे अच्छे के लिए मारता है और हमे परमेश्वर की ओर मड़कर वापस आना है, उसके पास जिसने इस संसार पर जय पाया है। प्रभु हमे विजय देना चाहता है इसलिए यह सारी चीज़े हमारे जीवन में आती हैं। वह हमे मारता है हमे इस संसार में विजय दिलाने के लिए, ताकि हम हमारे स्वर्गीय घर जा पाए। हम पढते हैं **यशायाह ४८:१० – देख, मैंने तुझे शुद्ध तो किया है परन्तु चांदी के समान नहीं; मैने दुख की भट्ठी में तुझे परख लिया है।** प्रभु ने हमे आग में ड़ाला है ताकि हम जैसे चांदी शुद्ध होती है वैसे शुद्ध करने के लिए लेकिन इस संसार के समस्याओं के भट्ठी में। इस संसार की तकलीफ़े तो हमसे हर रोज सामना किया जाएगा। चांदी तो भट्ठी में एक दिन में शुद्ध होते है लेकिन हमारे जीवनो में हमे मुसीबतों का और मुश्किल स्थितियों का सामना बार–बार करना पड़ता है। आज हम पाप से बच गए हैं, लेकिन कल का क्या भरोसा। कल भी यही स्थिति हमारे जीवनों में आ सकती है और हमे सावधान रहना है और बचना है। हम बच सकते हैं पाप से क्योंकि उसने हमे चुना है। एक दिन हमे इन सारी स्थितियों पर विजय प्राप्त होगा और हम अपने पिता के घर में हम प्रभु को देख सकते हैं, प्राचिनों को, हमारे स्वर्गीय घर को, चुने हुए लोगों को और उनको देख सकते हैं जो प्रभु में मरे हैं। जब प्राचीन हमे देखेंगे तो वें हमारे बारे में क्या कहेंगे, हम देखते हैं **प्रकाशितवाक्य ७:१३-१५ – इसके पश्चात प्राचीनों में से एक ने मुझ से पूछा, "ये जो श्वेत वस्त्र धारण किए हुए हैं, कौन हैं, और कहां से आए हुए हैं?" मैंने उत्तर दिया, हे मेरे प्रभु, तू ही जानता**

है।" उसने मुझ से कहा, "ये वे है, जो उस महाक्लेश में से निकल कर आए हैं। इन्होंने अपने वस्त्र मेमने के लहू में धोकर श्वेत किए हैं इस कारण ये परमेश्वर के सिंहासन के सामने हैं और उसके मन्दिर में दिन–रात उसकी सेवा करते हैं जो सिंहासन पर बैठा है वह उन पर अपनी छाया करेगा। जब हम हमारी सारी मुसीबतों पर जो इस पृथ्वी पर है विजय पाएंगे और हम हमारे स्वर्गीय घर में जाएंगे, तब प्राचीन हमारे बारे में गवाही देंगे। प्रभु को हमारे साथ वास करना चाहिए। विजय प्राप्त करने के लिए हमारी सारी मुसीबतों में और हमारे दुखों में, यह ज़रूरी है कि प्रभु हमारे साथ रहे ताकि हम विजयी बने। तब हम उन ज़बानों को दोषी ठहरा सकते हैं जो हमारे विरूद्ध झूठ बोलती हैं क्योंके परमेश्वर जिसने संसार को जीत लिया हमारे साथ हैं। यह वह है जिसने वचन दिया है कि, **यूहन्ना १६रू३३** और वह मनुष्य नहीं कि झूठ बोले। यह वचन हम सब के लिए है। हम कैसे प्रभु को हमारे साथ रखते हैं उसी तरह से हम प्रभु से आशीष पाएंगे। **– ये बातें मैंने तुमसे कही हैं, कि तुम मुझमें शांति पाओ। संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु साहस रखो – मैंने संसार को जीत लिया है।** जैसे कि प्रभु ने कहा है कि क्लेश और संकट तो इस संसार में होंगे लेकिन हमे धाड़स बाँधना है, वह यह है कि आनंदित, हर्षित होकर प्रभु पर विश्वास रखें। हम इस संसार में संकट का सामना करेंगे लेकिन हमे विश्वास करना है कि प्रभु ने इस संसार पर जय पाया है। प्रभु ने इस संसार पर विजय प्राप्त किया और वह ज़रूर हमारे जीवनों में जय देगा।

येशु – परमेश्वर जो हमे फलदायक वृक्ष बनाता है।

हम देखते है यूसुफ के जीवन में, उसने बहुत से मुसीबतें झेले। उसके भाइयों ने उसे गड्ड़े में डाला और फिर उन्होंने उसे गुलामी के लिए बेच दिया, तब उसके मालिक की पत्नी ने उसपर आरोप लगाया और उसे कैदख़ाने में जाना पड़ा। लेकिन इन सब परिस्थितियों मे प्रभु उसके साथ था और उसे एक फलदायक वृक्ष बनाया। हम पढ़ते हैं **उत्पत्ति ४९:२२-२४ – यूसुफ एक फलवन्त डाली है, वह सोते के पास लगी हुई फलवन्त लता की एक डाली है, उसकी डालियां दीवाल पर फैल जाती हैं। धनुर्धारियों ने उस पर भयंकर आक्रमण किया और उस पर तीर मारे और उसके पीछे पड़ गए। परन्तु उसका धनुष दृढ़ रहा और उसकी भुजाएं याकुब के शक्तिमान परमेश्वर के हाथों के द्वारा फुर्तीली हुईं। उसी के पास से वह चरवाहा अर्थात इस्राएल का पत्थर आएगा।** प्रभु ने यूसुफ के जीवन में फल देखा। वह फल क्या था? उसकी सारी मुसीबतों और दुखों में उसने परमेश्वर पर विश्वास किया जिसने संसार पर जय पाया। प्रभु वह फल हम सबके जीवनों में आज भी देखना चाहता है। यूसुफ़ केवल पत्तों वाला पेड़ नहीं था जैसे वह पेड़ जिसके पास प्रभु फल खाने आया और केवल हरी पत्तियाँ उसपर पाई, फल नहीं। यूसुफ ने उसके सारे क्लेशों में उस परमेश्वर पर विश्वास किया जिसने संसार पर जय पाया। इसलिए प्रभु गवाही देता है कि उसने फल लाया। यह हमारा परमेश्वर है जो हम में से हर एक के जीवन में फल देखना चाहता है जैसे दिया गया है उत्पत्ति ४९:२२-२४ में। हर स्थिति में, चाहे वह बीमारी हो, दुख, बुरा समय या झूठा आरोप, हमे प्रभु पर विश्वास करना है जिसने संसार को जीता है।

येशु वह जो हमारे पापों के लिए मरा

हम पढ़ते हैं **यशायाह ५३रू६ – हम तो सब के सब भेड़ों के समान भटक गए थे, हम में से प्रत्येक ने अपना अपना मार्ग लिया, परन्तु यहोवा ने हम सब के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया।** संसार पर, हमारे पापों पर और हमारी सारी मुसीबतों पर उसने हमे विजय दिया है इसलिए हमे इस परमेश्वर

पर भरोसा करना है। हम पढ़ते हैं **मत्ती १६रू२४ – तब येशु ने अपने चेलों से कहा, "यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इनकार करे और अपना क्रूस उठाकर मेरे पीछे चले।** यूसुफ के पास यह आशीष था। उसने अपने आप को इनकार किया और उसके परमेश्वर के नाम पर खड़ा हुआ और आखिर में विजय प्राप्त किया। इसलिए जब प्राचीनों ने यूसुफ को देखा होगा तो कहा होगा यह वही है जो सफ़ेद वस्त्र में है। जैसे दिया गया है प्रकाशितवाक्य के किताब में। इसलिए तुम्हारे दुखों और तकलीफ़ों के मध्य, प्रभु को याद करो, उस क्रूस को याद करो जिस पर येशु मरा और वह सारी बातों का ध्यान रखेगा।

चाहे सबसे बुरी परिस्थिति आए, याद रखो कि प्रभु जिसने संसार पर विजय दिया तुम्हारे साथ है। प्रभु दुष्ट लोगों के मुँह को बंद कर सकता है और तुम्हे जय दे सकता है। मेरे जीवन में प्रभु ने मुझे बहुत बार विजय दिया हैं और आज भी वही परमेश्वर जीवित है। हम पढ़ते हैं **मत्ती १०:३८ – और जो अपना क्रूस उठाकर मेरे पीछे नहीं चलता, वह मेरे योग्य नहीं।** हमारी सारी मुसीबतों में और हमारे दुख में हमे प्रभु का पीछा करना हैं। हमे हमारा क्रूस उठाना है। हमारे कठिन समयओं में हमे उसका पीछा अधिक विश्वास के साथ करना है। हमारे जीवन का क्रूस, हमारा दुख और शर्मिंदगी हैं जिसका हम सामना करते हैं। ऐसा नहीं है कि हम मुश्किलों का सामना नहीं करेंगे और प्रभु की सेवा में हमेशा आनंद होगा। हमारी तकलीफ़ों में, दुख और कठिनाइयों में हमे प्रभु की सेवा करना है और इस तरह से हम प्रभु का पीछा कर सकते हैं। हम देखते हैं **मत्ती १०:३९ – जो अपना प्राण बचाता है वह उसे खोएगा, और जो कोई मेरे कारण अपना प्राण खोता है वह उसे पाएगा।** अगर हम अपना जीवन छोड़ देते हैं और प्रभु से प्यार करते हैं और उसपर विश्वास करते हैं तब हम इस जीवन में जीवन पाएंगे और जीएंगे। हम पढ़ते हैं **यशायाह ६२:3 – तू यहोवा के हाथ में एक शोभायमान मुकुट, हां, अपने परमेश्वर के हाथ में राजसी पगड़ी ठहरेगी।** अगर हम विश्वास में उसकी उपस्थिति में जाते हैं परमेश्वर के वचन के अनुसार, तब हम उसके अनमोल लोग बनेंगे।

पवित्र–शास्त्र एक स्त्री के बारे में कहता है जो पिछले अठारह वर्ष से कूबड़ी थी, लेकिन प्रभु ने उसे छूआ और उसे चंगा किया और उसने प्रभु की स्तुति की। यह वह सामर्थी परमेश्वर है जो हमारे साथ है। हमे प्रभु पर विश्वास में रुकना हैं जिस प्रभु ने संसार पर जय पाया है वह हम पर दया करेगा। तीन दिन और रात भीड़ आई और प्रभु के वचन को सुना। प्रभु ने उन्हे खाली हाथ नहीं भेजा, उसने उनपर दया किया। इसलिए जब हम प्रभु पर रुकते हैं वह हमे लज्जित नहीं करेगा। सच में जब हम उसपर विश्वास करते हैं वह हमे नहीं छोड़ेगा। प्रभु इस दुनिया में हमे जीवन देने आया। पवित्र–शास्त्र कहता है **यूहन्ना १६:३३ – ये बातें मैंने तुमसे कही हैं, कि तुम मुझ में शांति पाओ। संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु साहस रखो – मैंने संसार को जीत लिया है।"** इसलिए हमे इस परमेश्वर पर विश्वास करना हैं, हम अपना सारा दुख, कठिनाइयाँ और बोझ को उसके हाथों में देदें और आज प्रभु तुम्हे विजय देगा।

पास्टर सरोजा म.